राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर के अन्तर्गत

स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के स्वाध्यायी पाठ्यक्रम

गायन/स्वरवाद्य

संगीत

संकाय

आवश्यक निर्देश :–

1. इस पाठ्यक्रम को केवल वर्ष 2013 में प्रवेश लेने वाले छात्र ही देखें। वर्ष 2013 के पूर्व प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी पुराने पाठ्यक्रम (ओल्ड सेलैबस) के कॉलम में देखें। क्योंकि वर्ष–2013 के पाठ्यक्रम और स्कीम(परीक्षा अंकन योजना) में परिवर्तन हुआ है।
2. वर्ष–2013 में बी.म्यूज. 3 वर्ष का हो गया है, इसके पूर्व चार वर्ष का था।
3. वर्ष–2013 से पूर्व में एम.म्यूज/एम.ए. के पाठ्यक्रम के प्रत्येक वर्ष में थ्योरी के 6 प्रश्न पत्र थे वर्तमान में मात्र 4 प्रश्न पत्र हो गये है।
4. गायन के शिक्षक तबले के प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर के सहायक विषय(गायन) को, तबले के पाठ्यक्रम (सेलैबस) में देखें, तथा तबले के शिक्षक गायन के प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर के सहायक विषय(तबला) को, गायन के पाठ्यक्रम (सेलैबस) में देखें।
5. वर्ष 2013 में सहायक विषयों के लिखित प्रश्नपत्र हटाकर मात्र प्रायोगिक पक्ष 50 नम्बर का रखा गया है।
6. वर्ष 2013 में स्नातक, स्नातकोत्तर, डिप्लोमा आदि सभी प्रकार के कोर्सों में आन्तरिक मूल्यांकन 50 नम्बर का नया स्कीम शुरू हुआ है। जिसमें कक्षा में सीखे पढ़े सांगीतिक नोट्स की फाईल और सांगीतिक कार्यक्रमों की रिपोर्ट फाइल दो अलग–2 बाह्य परीक्षक के समक्ष आन्तरिक परीक्षक को दिखाना है। फिर आन्तरिक परीक्षक उस फाईल को देखकर नम्बर चढ़ाकर फाईल विद्यार्थी को वापस देगा।
7. बी.ए. आनर्स का आन्तरिक मूल्यांकन तीनों विषयों के कक्षाध्यापक की कमेटी बनाकर अपने–अपने विषयों की फाईल देखकर संयुक्त रूप से नम्बर चढ़ायेंगे।
8. वर्ष 2013 में पाश्चात्य संगीत गिटार एवं कीबोर्ड तथा सुगम संगीत एवं लोकसंगीत में भी डिप्लोमा कोर्स संचालित किये गये हैं।

कृपया उपर्युक्त निर्देशों को ध्यान से पढ़कर इनके अनुसार पाठ्यक्रम का संचालन किया जाये अन्यथा इस विषय पर कोई तकनीकी परेशानी होने पर वि.वि. जिम्मेदार नहीं होगा।

अनुक्रमणिका

परिशिष्ठ क्रमांक	पाठ्यक्रम
	परीक्षा अंकन योजना
परिशिष्ठ कं. 01	बी. म्यूज. स्वाध्ययी गायन एवं स्वर वाद्य
परिशिष्ठ कं. 02	बी. ए. स्वाध्ययी गायन एवं स्वर वाद्य
परिशिष्ठ कं. 03	एम. म्यूज./एम.ए. स्वाध्ययी गायन एवं स्वर वाद्य
	महाविद्यालय स्तर के स्वाध्यायी पाठ्यक्रम
परिशिष्ठ क.–04	बी. म्यूज – प्रथम वर्ष (स्वाध्यायी) गायन एवं स्वर वाद्य
परिशिष्ठ क.–05	सहायक विषय तबला (प्रायोगिक) गायन एवं स्वर वाद्य
परिशिष्ठ क.–06	बी. म्यूज – द्वितीय वर्ष (स्वाध्यायी) गायन एवं स्वर वाद्य
परिशिष्ठ क.–07	सहायक विषय सुगम एवं लोक संगीत (प्रायोगिक)
परिशिष्ठ क.–08	बी. म्यूज – तृतीय वर्ष (स्वाध्यायी) गायन एवं स्वर वाद्य
परिशिष्ठ क.–09	बी.ए.– प्रथम वर्ष (स्वाध्यायी) गायन एवं स्वर वाद्य
परिशिष्ठ क.–10	बी.ए.– द्वितीय वर्ष (स्वाध्यायी) गायन एवं स्वर वाद्य
परिशिष्ठ क.–11	बी.ए.– तृतीय वर्ष (स्वाध्यायी) गायन एवं स्वर वाद्य
परिशिष्ठ क.–12	एम. म्यूज/एम. ए. स्वाध्यायी विद्यार्थियों हेतु पाठ्यक्रम एम.ए. पूर्वार्द्ध
परिशिष्ठ क.–13	एम. म्यूज/एम. ए. स्वाध्यायी विद्यार्थियों हेतु पाठ्यक्रम एम.ए. उत्तरार्द्ध

परिशिष्ठ क्र.–01

MARKING SCHEME

B.MUS (PRIVATE)

B.MUS. I YEAR(previous)

NO	SUBJECT	MAX	MIN	TOTAL
1	**ENTREPRENEURSHIP** **(Foundation)**	50	17	50
2	**HINDI** **(Foundation)**	50	17	50
3	**ENGLISH** **(Foundation)**	50	17	50
4	**VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)**			
	THEORY-I science of music	100	33	100
	THEORY-II Applied principals of music	100	33	100
	PRACTICAL Demonstration and viva	200	66	200
5	**TABLA (subsidiary) PRACTICAL** Demonstration and viva	100	33	100
6	**INTERNAL ASSESSMENT** **(Notation,Rag description & Music programme attending report file)**	50	17	50
	GRAND TOTAL			**700**

B.MUS. II YEAR

NO	SUBJECT	MAX	MIN	TOTAL
1	**ENVIRONMENTAL STUDY** **(Foundation)**	50	17	50
2	**HINDI** **(Foundation)**	50	17	50
3	**ENGLISH** **(Foundation)**	50	17	50
4	**VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)**			
	THEORY- I General study of music systems	100	33	100
	THEORY-II Applied principals of music	100	33	100
	PRACTICAL Demonstration and viva	200	66	200
5	**Light & Folk (subsidiary) PRACTICAL** Demonstration and viva	100	33	100
6	**INTERNAL ASSESSMENT** **(Notation,Rag description & Music programme attending report file)**	50	17	50
	GRAND TOTAL			**700**

B.MUS. IIIYEAR(final)

NO	SUBJECT	MAX	MIN	TOTAL
1	**Computer** (Foundation)	100	33	100
2	**VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)**			
	THEORY-I History of Music	100	33	100
	THEORY-II Applied principals of music	100	33	100
	PRACTICAL-I Demonstration and viva	200	66	200
	PRACTICL-II STAGE PERFORMANCE	150	50	150
3	**INTERNAL ASSESSMENT** (Notation,Rag description & Music programme attending report file)	50	17	50
	GRAND TOTAL			**700**

परिशिष्ठ क्र.–02

MARKING SCHEME

B.A. I YEAR (PRIVATE)

NO	SUBJECT	MAX	MIN	TOTAL
1	**FOUNDATION COURSE**			
	ENTREPRENEURSHIP	50	17	50
	HINDI	50	17	50
	ENGLISH	50	17	50
2	**LITERATURE (HINDI/ENGLISH/SANSKRIT)**			
	THEORY-I	50	17	50
	THEORY-II	50	17	50
3	**SOCIAL SCIENCE (HISTORY/PHILOSOPHY)**			
	THEORY-I	50	17	50
	THEORY-II	50	17	50
4	**VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)**			
	THEORY- indian music	100	33	100
	PRACTICAL Demonstration and viva	200	66	200
5	**INTERNAL ASSESSMENT (Notation,Rag description & Music programme attending report file)**	50	17	50
	GRAND TOTAL			**700**

B.A. II YEAR

NO	SUBJECT	MAX	MIN	TOTAL
1	**FOUNDATION COURSE**			
	ENVIRONMENTAL STUDY	50	17	50
	HINDI	50	17	50
	ENGLISH	50	17	50
2	**LITERATURE (HINDI/ENGLISH/SANSKRIT)**			
	THEORY-I	50	17	50
	THEORY-II	50	17	50
3	**SOCIAL SCIENCE (HISTORY/PHILOSOPHY)**			
	THEORY-I	50	17	50
	THEORY-II	50	17	50
4	**VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)**			
	THEORY- indian music	100	33	100
	PRACTICAL Demonstration and viva	200	66	200
5	**INTERNAL ASSESSMENT (Notation,Rag description & Music programme attending report file)**	50	17	50
	GRAND TOTAL			**700**

B.A.IIIYEAR(final)

NO	SUBJECT	MAX	MIN	TOTAL
1	**FOUNDATION COURSE**			
	COMPUTER	50	17	50
	HINDI	50	17	50
	ENGLISH	50	17	50
2	**LITERATURE (HINDI/ENGLISH/SANSKRIT)**			
	THEORY-I	50	17	50
	THEORY-II	50	17	50
3	**SOCIAL SCIENCE (HISTORY/PHILOSOPHY)**			
	THEORY-I	50	17	50
	THEORY-II	50	17	50
4	**VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)**			
	THEORY- indian music -	100	33	100
	PRACTICAL Demonstration and viva	200	66	200
5	**INTERNAL ASSESSMENT** (Notation,Rag description & Music programme attending report file)	50	17	50
	GRAND TOTAL			**700**

परिशिष्ठ क्र.–03

M.MUS/M.A. PRIVATE (I YEAR)

NO	SUBJECT	MAX	MIN	TOTAL
1	**VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)**			
	THEORY-I History of indian music	100	33	100
	THEORY-II Aplied principals of music theory	100	33	100
2	**PRACTICAL-I** Demonstration and viva	300	99	300
	PRACTICL-II STAGE PERFORMANCE	150	50	150
3	**INTERNAL ASSESSMENT** (Notation,Rag description & Music programme attending report file)	50	17	50
	GRAND TOTAL			**700**

M.MUS/M.A. final (I IYEAR)

NO	SUBJECT	MAX	MIN	TOTAL
1	**VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)**			
	THEORY-I History of indian music	100	33	100
	THEORY-II Aplied principals of music theory	100	33	100
2	**PRACTICAL-I** Demonstration and viva	300	99	300
	PRACTICL-II STAGE PERFORMANCE	150	50	150
3	**INTERNAL ASSESSMENT** (Notation,Rag description & Music programme attending report file)	50	17	50
	GRAND TOTAL			**700**

परिशिष्ठ क्र.–04

बी.म्यूज प्रथम वर्ष (स्वाध्यायी)
गायन/स्वरवाद्य
प्रथम प्रश्न पत्र
संगीत का विज्ञान

समय–3 घण्टे पूर्णांक.–100

1. संगीतोपयोगी ध्वनि की विशेषताएँ–

   तीव्रता, तारता, गुण, कालमान, उक्त सन्दर्भ में कंपन, कम्प विस्तार, आवृत्ति, उपस्वर, का परिचय।

2. संगीत, नाद, श्रुति, स्वर (शुद्ध, विकृत, चल, अचल), बाइस श्रुतियों में वर्तमान सप्तक की स्वर स्थापना, सप्तक (मंद्र, मध्य, तार), अष्टक, पूर्वांग, उत्तरांग, वर्ण, अलंकार, (पल्टा), स्थायी, अन्तरा, संचारी आभोग की परिभाषा। राग एवं थाट की परिभाषा व उनका तुलनात्मक अध्ययन, दस थाटों के नाम व स्वर, आश्रयराग, वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, वर्जित स्वर, आरोह–अवरोह, राग स्वरूप (पकड़), राग की जाति (औडव, षाडव व सम्पूर्ण) का अध्ययन।

3. ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना, चतुरंग, लक्षणगीत, स्वरमालिका (सरगम) भजन, मसीतखानी व रजाखानी गत का परिचय। शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत एवं लोक संगीत का ज्ञान तथा गीत, गजल, होरी का परिचय एवं महत्व। गायन के परिक्षार्थियों के लिए तानपुरा तथा वाद्य के परिक्षार्थियों के लिए अपने–अपने वाद्य का सामान्य परिचय तथा उनके विभिन्न अवयवों का सचित्र वर्णन। साथ ही उनके तारों को विभिन्न स्वरों में मिलाने की जानकारी।

4. गायन और वादक के गुण–दोष, काकू आदि शब्द भेद का (संगीत रत्नाकर के आधार पर) अध्ययन।

5. पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे, अमीर खुसरो, मानसिंह तोमर, स्वामी हरिदास एवं तानसेन का जीवन परिचय तथा संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।

बी.म्यूज प्रथम वर्ष (स्वाध्यायी)
द्वितीय प्रश्नपत्र
संगीत के क्रियात्मक सिद्धांत

समय– 3 घण्टे

पूर्णांक–100

1. पाठ्यक्रम के राग, यमन, भैरव, भूपाली, खमाज, काफी, वृन्दावनी, सारंग, दुर्गा, बिलावल या अल्हैया बिलावल का शास्त्रीय परिचय।
2. निम्न अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास–

   (अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए–

   - पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका एवं लक्षणगीत।
   - पाठ्यक्रम के किन्हीं चार रागों में विलम्बित ख्याल।
   - पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक–एक मध्यलय ख्याल। (आलाप तथा तानों सहित)
   - विभिन्न रागों में एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन सहित) एवं एक तराना।

   (ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए–

   - पाठ्यक्रम के किन्हीं चार रागों में एक–एक विलम्बित गत अथवा मसीतखानी गत अथवा विलम्बित ख्याल।
   - पाठ्यक्रम के रागों में से प्रत्येक में एक मध्यलय अथवा रजाखानी गत अथवा द्रुतलय की रचना (आलाप तथा तानों, तोडों सहित)
   - पाठ्यक्रम के किसी एक राग में तीन ताल से भिन्न अन्य ताल में रचना का तानों सहित अभ्यास।
3. लय (विलम्बित, मध्य, द्रुत), ठाह, दुगुन, मात्रा, ताल, विभाग, सम, ताली, खाली, ठेका, आवर्तन की जानकारी। तबले का संक्षिप्त परिचय। तबले की बनावट व उसके विभिन्न अंगों का सचित्र वर्णन। त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल और धमार, तालों का परिचय ठाह सहित ताल–लिपि में लेखन।
4. मींड, कण, खटका मुर्की, आलाप, तान, बोल (मिजराब/जवा के बोल) प्रहार (आकर्ष/अपकर्ष), सूत, ज़मज़मा, और तोडा का पारिभाषिक परिचय। पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे स्वरलिपि का ज्ञान।
5. लगभग 400 शब्दों में संगीत संबधी किसी विषय पर निबंध।

बी.म्यूज प्रथम वर्ष (स्वाध्यायी)
प्रायोगिकः- प्रदर्शन एवं मौखिक

समयः30 मिनिट **पूर्णांक–200**

1. पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं किन्हीं दो थाटों में दस–दस अलंकारों का अभ्यास। गायन के विद्यार्थियों हेतु पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका और लक्षणगीत का गायन।
2. पाठ्यक्रम के राग– यमन, भैरव, भूपाली, खमाज, काफी, वृन्दावनी, सारंग, दुर्गा, बिलावल या अल्हैया बिलावल।
   - अ. पाठ्यक्रम के किन्ही चार रागों में विलम्बित ख्याल/विलंबित रचना/मसीतखानी गत का अभ्यास।
   - ब. पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय ख्याल/रज़ाखानी गत/मध्यलय रचना का पाँच तानों सहित प्रदर्शन।
   - स. पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद तथा एक तराने का गायन अथवा किसी एक राग में तीनताल से भिन्न अन्य ताल में रचना का अपने वाद्य पर प्रदर्शन।

3. आकाशवाणी द्वारा मान्य वन्दे मातरम्/भजन/देशभक्ति गीत का स्वरलय में गायन अथवा वादन या किसी धुन को अपने वाद्य पर प्रस्तुत करना।
4. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर प्रदर्शन–
   त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल एवं धमार तथा त्रिताल की दुगुन का अभ्यास।

:संदर्भ ग्रंथः

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. संगीत शास्त्र दर्पण – श्री शांति गोवर्धन
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. सितार मलिका –
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. संगीत वाद्य – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12.राग शास्त्र – डॉ. गीता बैनर्जी
13.संगीत मणि – डॉ. महारानी शर्मा
14.प्रणव भारती भाग 1 से 7 – पं. ओमकारनाथ ठाकुर
15.संगीतांजली भाग 1 से 7 – पं. ओमकारनाथ ठाकुर

परिशिष्ठ क.–05

बी. म्यूज प्रथम वर्ष(स्वाध्यायी)
(गायन विषय के विद्यार्थियों के लिये)
सहायक विषय–तबला
प्रायोगिकः- प्रदर्शन एवं मौखिक

पूर्णांक : 100

1. तबले के वर्णों की निकास विधि का समुचित तथा विभिन्न वर्णों एवं वर्ण समूहों को तबले/बांये पर बजाने का अभ्यास।

2. त्रिताल, एकताल, झपताल, रूपक, दीपचन्दी, कहरवा तथा दादरा ताल के ठेकों को हाथ से ताली देकर एकगुन, दुगुन, में पढंत करना एवं तबले पर बजाना।

3. त्रिताल में निम्नलिखित का लहरे के साथ एकल वादन :–
1. दो कायदे – न्यूनतम चार पल्टों तथा तिहाई सहित।
2. न्यूनतम दो मुखडे।
3. पहली, पांचवी, नवीं तथा तेरहवीं मात्राओं से उठने वाली तिहाईयॉ बजाने की क्षमता।
4. झपताल में न्यूनतम दो तिहाईयॉ (दमदार, बेदम) बजाने तथा पढने की क्षमता।
5. कहरवा तथा दादरा ताल के ठेके के दो–दो प्रकार।
6. ठेकों के प्रकार :– त्रिताल, झपताल, रूपक।
7. गायन शैलियों के साथ तबला संगति का अभ्यास।

आंतरिक मूल्यांकन

पूर्णांकः 50

आवश्यक निर्देश–: आंतरिक मूल्यांकन के अन्तर्गत प्रत्येक सेमेस्टर एवं प्रत्येक कोर्स के विद्यार्थियों को प्रायोगिक परीक्षा के समय दो फाईल प्रस्तुत करनी होगी।

1. कक्षा में सीखे गये रागो की स्वर लिपि/तोड़ो का विवरण
2. विश्वविद्यालय एवं नगर में आयोजित संगीत कार्यक्रमों की रिर्पोट

:संदर्भ सूचीः

1. तबला प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
2. तबला कौमुदी भाग 1 एवं 2 – पं. रामशंकर पागलदास जी
3. ताल प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा

परिशिष्ठ क.–06

बी.म्यूज द्वितीय वर्ष (स्वाध्यायी)
गायन/स्वरवाद्य
प्रथम प्रश्नपत्र
संगीत पद्वतियों का सामान्य अध्ययन

समय–3 घण्टे पूर्णांक–100

1. टोन, मेजर टोन, माइनर टोन, सेमीटोन, अनुनाद, डोल, उपस्वर (स्वयंभु स्वर), प्रतिध्वनि, तरंगमान तथा तरंग वेग, ग्रंथि–प्रतिग्रंथि, स्वर अंतराल प्रमुख स्वर संवादो का अध्ययन। स्केल–नेचुरल स्केल, डायटोनिक स्केल तथा टेम्पर्ड स्केल।
2. हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक सप्तकों का तुलनात्मक अध्ययन। पूर्वांग–उत्तरांग राग। वादी, संवादी स्वर से राग गायन के समय का संबंध, संधिप्रकाश राग, अध्वदर्शक स्वर, परमेल, प्रवेशक राग की जानकारी।
3. राग के ग्रह आदि दस लक्षण। आविर्भाव, तिरोभाव, नायकी, गायकी, वाग्गेयकार की परिभाषा लक्षण एवं प्रकार। गमक की परिभाषा और उसके प्रकार।
4. मुगल काल से अब तक का संगीत का संक्षिप्त इतिहास।
5. सदारंग/अदारंग, गोपाल नायक, बैजू बख्शू हस्सू' हद्दू खाँ, भास्कर बुआ बखले, बाबा अलाउद्दीन खाँ, उ. हाफिज अली खाँ एवं उ. इनायत खाँ तथा पं. पन्नालाल घोष का जीवन परिचय तथा संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।
6. तत् (तंत्री), अवनद्ध, घन एवं सुषिर वाद्य वर्गीकरण का अध्ययन। वितत् वाद्य का स्पष्टीकरण। गायन के विद्यार्थी के लिए तानपूरा का एवं वाद्य के विद्यार्थी हेतु अपने–अपने वाद्य का संक्षिप्त ऐतिहासिक अध्ययन।

बी.म्यूज द्वितीय वर्ष (स्वाध्यायी)
द्वितीय प्रश्नपत्र
संगीत के कियात्मक सिद्धांत

समय–3 घण्टे **पूर्णांक–100**

1. निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय अध्ययन एवं पिछले पाठ्यक्रम के रागों का तुलनात्मक अध्ययन– बागेश्री, बिहाग भीमपलासी, आसावरी, कामोद, केदार, देश, भैरवी, हमीर और पटदीप।
2. निम्न अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास।

(अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए–

- पाठ्यक्रम के किन्हीं पांच रागों में विलम्बित ख्याल। (आलाप तथा तानों सहित)
- पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय ख्याल। (आलाप तथा तानों सहित)
- एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन, चौगुन सहित) तथा एक तराना।

(ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए–

- पाठ्यक्रम के किन्ही पांच रागों में (आलाप, तानों/तोड़ो सहित) एक–एक विलम्बित गत अथवा मसीतखानी गत अथवा विलम्बित ख्याल।(गायकी अथवा तंत्रकारी सहित)
- पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय अथवा रजाखानी गत अथवा द्रुतलय की रचना। (आलाप तथा तानों/तोडों सहित)
- पाठ्यक्रम के किसी एक राग में तीनताल से भिन्न अन्य ताल में रचना का तानों सहित अभ्यास।

3. त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल, धमार, तिलवाड़ा रूपक, तीव्रा तथा सूलताल के ठेकों का ज्ञान एवं दुगुन, चौगुन में लिखने का अभ्यास।
4. बोल आलाप, बोलतान, कृन्तन, जोड़, झाला, तारपरन तथा लागडाट की परिभाषा । ठुमरी, कजरी, चैती और कव्वाली का परिचय। तान के प्रकार। पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर स्वरलिपि व ताललिपि पद्धति का अध्ययन।
5. संगीत संबंधी विषय पर लगभग 400 शब्दों में निबंध लेखन।

प्रायोगिक परीक्षा
बी.म्यूज द्वितीय वर्ष (स्वाध्यायी)
मौखिक एवं प्रदर्शन

समय– 30 मिनिट **पूर्णांक–200**

पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं पाठ्यक्रम के राग बागेश्री, बिहाग भीमपलासी, आसावरी, कामोद केदार, देश, भैरवी, हमीर और पटदीप। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से पिछले पाठ्यक्रम के रागों की पुनरावृत्ति।

अ पाठ्यक्रम के किन्ही पाँ रागों में एक–एक विलम्बित ख्याल (आलाप–तान सहित) का गायन अथवा विलम्बित रचना/मसीतखानी गत (गायकी अथवा तंत्रकारी सहित) का प्रदर्शन।

ब पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय ख्याल/रजाखानी गत/मध्यलय रचना का पाँच तानों सहित प्रदर्शन।

स पाठ्यक्रम के विभिन्न रागों मे एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन चौगुन सहित) तथा एक तराना का गायन अथवा पाठ्यक्रम के किसी एक राग में तीनताल से भिन्न अन्य ताल में रचना का तानों सहित अपने वाद्य पर प्रदर्शन।

द गायन के विद्यार्थी हेतु पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका, लक्षण गीत का गायन।

1. भजन/देशभक्ति गीत या सुगम संगीत की रचना का स्वरलय में गायन अथवा वाद्य पर प्रदर्शन या किसी धुन को अपने वाद्य पर प्रस्तुत करना।
2. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर ठाह एवं दुगुल में बोलकर प्रदर्शन– त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल, धमार, तिलवाड़ा, रूपक, तीव्रा तथा सूलताल।

:संदर्भ ग्रंथः

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. संगीत शास्त्र दर्पण – श्री शांति गोवर्धन
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. सितार मलिका –
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. संगीत वाद्य – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12.राग शास्त्र – डॉ. गीता बैनर्जी
13.संगीत मणि – डॉ. महारानी शर्मा
14.प्रणव भारती भाग 1 से 7 – पं. ओमकारनाथ ठाकुर
15.संगीतांजली भाग 1 से 7 – पं. ओमकारनाथ ठाकुर

परिशिष्ठ क्र.–07

सहायक विषय
सुगम एवं लोक संगीत प्रायोगिक
बी.म्यूज.–द्वितीय वर्ष (स्वाध्यायी)
खण्ड (अ) प्रदर्शन एवं मौखिक (सुगम संगीत)

पूर्णांक : 50

1. निम्नलिखित संत, गीतकार एवं शायरों के चार भजन, चार गीत एवं चार गजलों का प्रशिक्षण।
   (1) तुलसीदास (2) सूरदास (3) मीराबाई (4) गुरूनानक (5) कबीर (6) निराला (7) नीरज
   (8) सुमित्रानंदन पंत (9) बच्च्न (10) फैज (11) गालिब (12) जफर (13) मीर
   (14) जिगर (15)महादेवी वर्मा
2. राग काफी एवं खमाज रागों में लक्षण गीत, सरगम, छोटा ख्याल का 5–5 तानों सहित गायन।
3. देश के किसी भी क्षेत्र में प्रचलित दो लोकगीत।
4. हारमोनियम बजाकर किसी एक रचना का गायन।
5. पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों को ठाह, दुगुंन, चौगुन को हाथ से ताली देकर बोलने का अभ्यास :–
   (अ) दीपचन्दी (ब) एकताल (स) रूपक

खण्ड (ब) लोक संगीत प्रायोगिक:- प्रदर्शन एवं मौखिक

पूर्णांक : 50

1. तालों का व्यवहारिक ज्ञान। दादरा कहरवा दीपचन्दी आदि। (लोक गीतों में प्रयोग होने वाले ठेके एवं तालों का ज्ञान)
2. अपने प्रदेश के अंचलों के एक–एक लोक गीतों का निम्नानुसार व्यवहारिक ज्ञान –
   (अ). संस्कार गीत,(ब). ऋतु गीत (स). श्रम गीत (द). उत्सव गीत(इ) मनोरंजन गीत
3. सीखी हुई किसी लोक रचना को हार्मोनियम पर बजाकर गाने का अभ्यास।
4. अपने प्रदेश के अंचलों के सीखे हुये लोकगीतों में शास्त्रीय संगीत के तत्व और लोकगीत तथा शास्त्रीय संगीत से सम्बन्ध।
5. निम्नलिखित भारत के प्रमुख प्रतिनिधि लोकगीतों का अवसर, स्वर पक्ष, प्रयुक्त होने वाले वाद्य, लय व ताल तथा भावार्थ सहित किन्हीं तीन का व्यवहारिक ज्ञान।बुन्देलखण्डी (मध्यप्रदेश), लावणी, पोवाड़ा (महाराष्ट्र), गरबा (गुजरात), विदेशिया (बिहार), भांगड़ा या टप्पा (पंजाब), बादल या भटियाली (पश्चिम बंगाल), बीहू (असम), चैती या कजरी (उत्तर प्रदेश), नाटी या गिद्दा (हिमाचल प्रदेश), उड़िया (उड़ीसा), मणीपुरी (मणिपुर), ओणम (केरल), माथुरी (आन्ध्र प्रदेश), आदि।
6. सीखे हुये लोक गीतों के साथ वाद्यों को बजाने का सामान्य ज्ञान।
   सीखे हुये किसी भी लोक रचना को स्वरबद्ध करने का अभ्यास।

आंतरिक मूल्यांकन

पूर्णांकः 50

आवश्यक निर्देश–: आंतरिक मूल्यांकन के अन्तर्गत प्रत्येक सेमेस्टर एवं प्रत्येक कोर्स के विद्यार्थियों को प्रायोगिक परीक्षा के समय दो फाईल प्रस्तुत करनी होगी।

1. कक्षा में सीखे गये रागो की स्वर लिपि/तोड़ो का विवरण
2. विश्वविद्यालय एवं नगर में आयोजित संगीत कार्यक्रमों की रिर्पोट

परिशिष्ठ क्र.–08

बी.म्यूज तृतीय वर्ष (स्वाध्यायी)
गायन/स्वरवाद्य
प्रथम प्रश्नपत्र
संगीत का इतिहास

समय– 3 घण्टे पूर्णांक–100

1. गांधर्व गान, निबद्ध और अनिबद्ध गान का सामान्य परिचय। अनिबद्ध के अंतर्गत रागालप्ति एवं रूपकालप्ति के भेद–प्रभेदों का अध्ययन। मार्ग–देशी का प्रारंभिक परिचय। ग्राम–मूर्च्छना के लक्षण और भेदों का अध्ययन।
2. भरत का श्रुति–निदर्शन एवं शारंगदेव द्वारा उल्लिखित चतुःसारणा का परिचय। वीणा के तार पर पं. अहोबल द्वारा शुद्ध–विकृत स्वरों की स्थापना विधि एवं पं. श्री निवास द्वारा उसका स्पष्टीकरण। ग्राम राग , देशीराग का वर्गीकरण, राग'रागिनी का वर्गीकरण का परिचय। थाट–राग वर्गीकरण तथा शुद्ध, छायालग, और संकीर्ण राग वर्गीकरण का अध्ययन।
3. पं. व्यंकटमखी के 72 मेल, उत्तर भारतीय संगीत में एक सप्तक से 32 थाटों की निर्माण विधि एवं एक थाट से 484 रागों की उत्पत्ति। ग्राम–मूर्च्छना और मेल की तुलना।
4. घराने की परिभाषा एवं स्पष्टीकरण। ख्याल के ग्वालियर, आगरा, दिल्ली, पटियाला, जयपुर और किराना घरानों का सामान्य परिचय तथा सेनिया घराने की सामान्य जानकारी।
5. उ. बडे गुलाम अली खां, पं. गजाननराव जोशी, पं. रविशंकर, उं. विलायत खाँ, पं. वी. जी. जोग, उ. बिस्मिलाह खाँ और पं. हरिप्रसाद चौरसिया का जीवन परिचय एवं संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।

बी.म्यूज तृतीय वर्ष (स्वाध्यायी)
द्वितीय प्रश्नपत्र
संगीत के क्रियात्मक सिद्धांत

समय– 3 घण्टे **पूर्णांक– 100**

1. निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय एवं पिछले पाठ्यक्रम के रागों का तुलनात्मक अध्ययन–

   जैजैवन्ती, मालकौस, जोनपुरी, पूरिया, छायानट, बहार, तोड़ी, बसन्त, रामकली, ललित, तिलककामोद और पूरियाधनाश्री।

2. निम्न अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास।

   (अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिए–

   - पाठ्यक्रम के किन्हीं छः रागों में (आलाप तथा तानों सहित) विलम्बित रचना का प्रदर्शन।
   - पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय ख्याल का (आलाप तथा तानों सहित) गायन।
   - एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन, तिगुन, चौगुन सहित) एवं एक तराना।

   (ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिए–

   - पाठ्यक्रम के छः रागों में एक–एक विलम्बित गत अथवा मसीतखानी गत अथवा विलम्बित ख्याल का (आलाप तानों/तोडों सहित) प्रदर्शन।
   - पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में एक मध्यलय अथवा रजाखानी गत अथवा द्रुतलय की रचना का (आलाप तथा तानों/तोडों सहित) प्रदर्शन।
   - किसी एक राग में तीनताल से पृथक अन्य ताल में रचना का गायकी अथवा तंत्रकारी सहित अभ्यास।

3. आड, कुआड, बियाड लयों की जानकारी। त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा, झपताल, चौताल, धमार, तिलवाडा, रूपक, तीव्रा, सूलताल, आड़ाचौताल, दीपचंदी तथा झूमरा तालों का परिचय उन्हें तिगुन, चौगुन में लिखने का अभ्यास।
4. स्वरलिपि एवं उसकी उपयोगिता। भारत में प्रचलित स्वरलिपियों का सामान्य ज्ञान। स्टाफ नोटेशन (स्वरलिपि) पद्धति का सामान्य परिचय। पाठ्यक्रम के रागों के आरोह–अवरोह व पकड़ का इस पद्धति में लेखन। हार्मनी और मेलोडी।
5. लगभग 500 शब्दो में सगीत संबंधी किसी विषय पर निबंध लेखन।

बी.म्यूज तृतीय वर्ष (स्वाध्यायी)
प्रायोगिक:-1 मौखिक एवं प्रदर्शन

समय– 30 मिनिट **पूर्णांक–200**

पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं पाठ्यक्रम के राग–जैजैवन्ती, मालकौस, जौनपुरी, पूरिया, छायानट, बहार, तोडी, बसन्त, रामकली, तिलककामोद और पूरियाधनाश्री। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से पिछले पाठ्यक्रम के रागों की पुनरावृत्ति।

अ पाठ्यक्रम के किन्हीं छः रागों में एक–एक विलम्बित ख्याल (आलाप–तान सहित) का गायन अथवा विलम्बित रचना/मसीतखानी गत (गायकी अथवा तंत्रकारी सहित) का प्रदर्शन।

ब पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय ख्याल/रजाखानी गत/मध्यलय रचना का पाँच तानों सहित प्रदर्शन

स पाठ्यक्रम के विभिन्न रागों में एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन, तिगुन व चौगुन सहित) तथा एक तराना का गायन। अथवा किसी एक राग में तीनताल से पृथक ताल मे रचना का गायकी अथवा तंत्रकारी सहित अभ्यास।

1. भजन/देशभक्ति गीत या सुगम संगीत की रचना का स्वरलय में गायन अथवा वाद्य पर प्रदर्शन या किसी धुन को अपने वाद्य पर प्रस्तुत करना।
2. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर बोलकर प्रदर्शन–
   - अ. त्रिताल, एकताल, दादर, कहरवा, झपताल, चौताल, धमार, तिलवाडा, रूपक, तीव्रा, सूलताल, आडाचौताल, दीपचंदी एवं झूमरा तालों की ठाह दुगुन एवं चौगुन।
   - ब. त्रिताल, एकताल, दादरा, कहरवा का तिगुन में प्रदर्शन।

बी.म्यूज तृतीय वर्ष (स्वाध्यायी)
प्रायोगिकः-2 मंच प्रदर्शन

समय– 30 मिनिट **पूर्णांक– 150**

1. परीक्षार्थी द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम में से कोई एक राग रचना का (विस्तृत गायकी/तन्त्रकारी सहित) प्रदर्शन।
2. परीक्षक द्वारा दिये गये पांच रागों में से किसी एक राग की गायकी/तन्त्रकारी के साथ प्रस्तुति।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से किसी एक राग में ठुमरी, टप्पा अथवा ठुमरी शैली पर आधारित रचना अथवा धुन का प्रदर्शन।

आंतरिक मूल्यांकन

पूर्णांकः 50

आवश्यक निर्देश–: आंतरिक मूल्यांकन के अन्तर्गत प्रत्येक सेमेस्टर एवं प्रत्येक कोर्स के विद्यार्थियों को प्रायोगिक परीक्षा के समय दो फाईल प्रस्तुत करनी होगी।

1. कक्षा में सीखे गये रागो की स्वर लिपि/तोड़ो का विवरण
2. विश्वविद्यालय एवं नगर में आयोजित संगीत कार्यक्रमों की रिर्पोट

:संदर्भ ग्रंथः

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. संगीत शास्त्र दर्पण – श्री शांति गोवर्धन
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. सितार मलिका –
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. संगीत वाद्य – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12.राग शास्त्र – डॉ. गीता बैनर्जी
13.संगीत मणि – डॉ. महारानी शर्मा
14.प्रणव भारती भाग 1 से 7 – पं. ओमकारनाथ ठाकुर
15.संगीतांजली भाग 1 से 7 – पं. ओमकारनाथ ठाकुर

परिशिष्ठ क्र.–09

बी.ए.प्रथम वर्ष (स्वाध्यायी)
भारतीय संगीत
विषयः–गायन एवं स्वरवाद्य
सैद्धांतिक

समय– 3 घण्टे **पूर्णांक– 100**

इकाई–1

1.पाठ्यक्रम में निर्धारित रागों एवं तालों की विवेचनात्मक जानकारी।

राग–यमन, अल्हैया, बिलावल, खमाज, भैरव, काफी, आसावरी, भूपाली, ब्रिन्दावनी, सारंग,

2.भीमपलासी, मालकौंस। ताल–तीनताल, तिलवाडा, चौताल, एकताल, दादरा, झपताल।

इकाई–2

1. नोटेशन पद्धति का ज्ञान।

2. पाठ्यक्रम की बंदिशों की स्वरलिपि पढने एवं लिखने का अभ्यास।

इकाई–3

1.परिभाषाऍं– नाद, श्रुति, स्वर, सप्तक, पूर्वांग, उत्तरांग, वर्ण, अलंकार, वादी, संवादी, अनुवादी,

2.विवादी, राग एवं थाट, मींड, घसीट, कृन्तन, जमजमा, गमक, खटका, मुर्की।

इकाई–4

1.निम्न गीत शैलियों का सामान्य ज्ञान–.

ध्रुपद,धमार,ख्याल,तराना,चतुरंग,मसीतखानी,रजाखानी,गत।

2 पाठ्यक्रम के तालों को ठाह, दुगुन और चौगुन में लिखने।

इकाई–5

1. परिचय एवं संगीत में योगदान–पं.विष्णु नारायण भातखण्डे, पं.विष्णु दिगम्बर पलुस्कर।

2. निम्न संगीतज्ञों का जीवन परिचय–स्वामी हरिदास, तानसेन,

प्रायोगिकः- प्रदर्शन एवं मौखिक

पूर्णांक–200

पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं प्रारंभिक दस अलंकार एवं दस थाटों का ज्ञान–

1. निम्न रागों का अध्ययन– यमन, अल्हैया, बिलावल, खमाज, भैरव, काफी, आसावरी, भूपाली, बिन्द्रावनी सारंग, भीमपलासी, मालाकौंस।
   उपरोक्त में से किन्हीं 08 रागों में सरगम, लक्षणगीत, किन्हीं 02 रागों में विलम्बित रचनांए आलाप, तान, सहित एवं द्रुत रचनाएँ। वादन के परीक्षार्थियों के लिए किन्हीं दो रागों में मसीतखानी गत 5–5 तानों सहित एवं किन्ही 06 रागों में रजाखानी गत 5–5 तानों सहित।
2. उपरोक्त में से किसी भी एक राग में ध्रुपद, एक धमार एवं तराना किन्हीं दो रागों में झाला (वादन के विद्यार्थियो के लिए)
3. पाठ्यक्रम के तालों का अध्ययनः
   तीनताल, तिलवाडा, चौताल, एकताल, दादरा, झपताल।

आंतरिक मूल्यांकन

पूर्णांकः 50

आवश्यक निर्देश–: आंतरिक मूल्यांकन के अन्तर्गत प्रत्येक सेमेस्टर एवं प्रत्येक कोर्स के विद्यार्थियों को प्रायोगिक परीक्षा के समय दो फाईल प्रस्तुत करनी होगी।

1. कक्षा में सीखे गये रागो की स्वर लिपि/तोड़ो का विवरण
2. विश्वविद्यालय एवं नगर में आयोजित संगीत कार्यक्रमों की रिर्पोट

:संदर्भ ग्रंथः

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. संगीत शास्त्र दर्पण – श्री शांति गोवर्धन
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. सितार मलिका –
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. संगीत वाद्य – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12.राग शास्त्र – डॉ. गीता बैनर्जी
13.संगीत मणि – डॉ. महारानी शर्मा
14.प्रणव भारती भाग 1 से 7 – पं. ओमकारनाथ ठाकुर
15.संगीतांजली भाग 1 से 7 – पं. ओमकारनाथ ठाकुर

परिशिष्ठ क्र.–10

बी.ए. द्वितीय वर्ष (स्वाध्यायी)
भारतीय संगीत
विषयः– गायन एवं वादन
सैद्धांतिक

समय– 3 घण्टे **पूर्णांक– 100**

इकाई–1

1. प्रायोगिक हेतु निर्धारित रागों एवं तालों की जानकारी एवं उनका तुलनात्मक अध्ययन।
2. पाठ्यक्रम के रागों की बंदिशों की स्वरलिपि लेखन ।

इकाई–2

1. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की तकनीकी जानकारी :–
2. कुतप, वृन्द, गायन एवं वादन, वाग्येकार, गांधर्व, गायक, नायक
   वादक एवं वाग्येकार के गुण अवगुण

इकाई–3

ध्वनि – संगीतिक एवं असासंगितिक ध्वनि, कंपन, कंपनांक, नाद उसकी जाति एवं गुण नाद का ऊंचा नीचापन, मेजर टोन, माइनर टोन, सेमी टोन की उपयोगिता।

इकाई–4

निम्नलिखित गीत प्रकारों का अध्ययन– गीत, गजल, भजन।

लोक संगीत की जानकारी– कजरी, चैती, मांड, गरबा, लावनी, होरी, धुन।

इकाई–5

1. पाठ्यक्रम के तालों में ठेका, दुगुन एवं तिगुन लिखने का अभ्यास ।
2. जीवनियाँ– अमीर खुसरो, शारंगदेव और अहोबल।

प्रायोगिकः- प्रदर्शन एवं मौखिक

पूर्णांक– 200

1. पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं निम्नलिखित में से किन्हीं आठ रागों में से दो विलम्बित ख्याल अथवा दो मसीतखानी गत, सरगम, लक्षणगीत, मध्यलय ख्याल अथवा रजाखानी गत,आलाप,तान,तोडों सहित।

   1. विहाग 2. हमीर 3. केदार 4. देस 5. बागेश्री 6. भीमपलासी

   7. मालकौंस 8. जौनपुरी 9. कालिंगडा 10.देषकार

2. उपरोक्त रागों में कोई एक ध्रुपद, एक धमार, एक तराना, दुगुन एवं तिगुन की लयकारियों साहित।

3. निम्नलिखित तालों के ठेके, ठाह, दुगुन, तिगुन हाथ से प्रदर्षित करना,

   1. तिलवाडा 2. झूमरा 3. धमार 4. सूलताल 5. रूपक 6. तीव्रा

आंतरिक मूल्यांकन

पूर्णांकः 50

आवश्यक निर्देश–: आंतरिक मूल्यांकन के अन्तर्गत प्रत्येक सेमेस्टर एवं प्रत्येक कोर्स के विद्यार्थियों को प्रायोगिक परीक्षा के समय दो फाईल प्रस्तुत करनी होगी।

1. कक्षा में सीखे गये रागो की स्वर लिपि/तोड़ो का विवरण
2. विश्वविद्यालय एवं नगर में आयोजित संगीत कार्यक्रमों की रिर्पोट

:संदर्भ ग्रंथः

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. संगीत शास्त्र दर्पण – श्री शांति गोवर्धन
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. सितार मलिका –
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. संगीत वाद्य – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12.राग शास्त्र – डॉ. गीता बैनर्जी
13.संगीत मणि – डॉ. महारानी शर्मा
14.प्रणव भारती भाग 1 से 7 – पं. ओमकारनाथ ठाकुर
15.संगीतांजली भाग 1 से 7 – पं. ओमकारनाथ ठाकुर

परिशिष्ठ क्र.–11

बी.ए. तृतीय वर्ष (स्वाध्यायी)
विषयः–गायन एवं स्वरवाद्य
सैद्धांतिक
भारतीय संगीत

समय– 3 घण्टे पूर्णांक– 100

इकाई–1

1. प्रायोगिक हेतु निर्धारित निम्न रागों का अध्ययन– शुद्धकल्याण, छायानट, रामकली, पूरिया, बसंत, बहार, दरबारी, कान्हाडा, मियामल्हार, दुर्गा
2. पाठ्यक्रम के रागों की बंदिषों एवं गतों का स्वरलेखन

इकाई–2

अहोबल एवं श्रीनिवास द्वारा वीणा के तार पर निर्धारित शुद्ध एवं विकृत स्वर स्थान।

इकाई–3

1. ग्राम, मूर्च्छना।
2. राग वर्गीकरण– राग रागिनी वर्गीकरण, मेलराग वर्गीकरण, थाट राग वर्गीकरण।

इकाई– 4

1. राग एवं जातियों का सामान्य ज्ञान। औडव, षाडव, संपूर्ण
2. संगीतज्ञों की जीवनी एवं योगदान– 1. उ. अलाउद्दीन खां, उ. फैयाज खॉ, पं. रविशंकर, कुमार गंधर्व, उ. विलायत खॉ

इकाई–5

1. निबद्ध, अनिबद्ध, आलप्ति, रागालाप, रूपकालाप की परिभाषाएँ।
2. पाठ्यक्रम के निम्न तालों का विवरण, आडा चौताल, दीपचंदी, सवारी, पंजाबी।

प्रायोगिकः- प्रदर्शन एवं मौखिक

पूर्णांक– 200

इकाई–1

पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं निम्नलिखित में से किन्ही आठ रागों में 3 विलंबित अथवा 3 मसीतखानी गत, सरगम, लक्षणगीत, मध्यलय ख्याल अथवा रजाखानी गत, आलाप तानों सहित।

इकाई–2

शुद्ध कल्याण, छायानट, रामकली, पूरिया, वसंत, बहार, दरबारी, मियामल्हार, दुर्गा।

इकाई–3

उपरोक्त रागों मे से एक में ध्रुपद, एक में धमार एवं तराना, दुगुन, तिगुन एवं चौगुन सहित गजल, गीत एवं भजन।

इकाई–4

निम्नतालों के ठेके।

आड़ा चौताल, दीपचंदी, पंचम,सवारी, पंजाबी।

आंतरिक मूल्यांकन

पूर्णांकः 50

आवश्यक निर्देश–:आंतरिक मूल्यांकन के अन्तर्गत प्रत्येक सेमेस्टर एवं प्रत्येक कोर्स के विद्यार्थियों को प्रायोगिक परीक्षा के समय दो फाईल प्रस्तुत करनी होगी।

1. कक्षा में सीखे गये रागो की स्वर लिपि/तोड़ो का विवरण
2. विश्वविद्यालय एवं नगर में आयोजित संगीत कार्यक्रमों की रिर्पोट

:संदर्भ ग्रंथः

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. संगीत शास्त्र दर्पण – श्री शांति गोवर्धन
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. सितार मलिका –
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. संगीत वाद्य – श्री लालमणि मिश्र
9 .हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10.चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11.संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12.राग शास्त्र – डॉ. गीता बैनर्जी
13.संगीत मणि – डॉ. महारानी शर्मा
14.प्रणव भारती भाग 1 से 7 – पं. ओमकारनाथ ठाकुर
15.संगीतांजली भाग 1 से 7 – पं. ओमकारनाथ ठाकुर

परिशिष्ठ क्र.–12

गायन/स्वरवाद्य पाठ्यक्रम (स्वाध्यायी)
एम.ए./एम.म्यूज. प्रथम वर्ष
प्रथम प्रश्नपत्र
भारतीय संगीत का इतिहास

समयः–3 घंटे पूर्णांक– 100

1. संगीत की उत्पत्ति से संबंधित विभिन्न मान्यताओं , भारतीय एवं पाश्चात्य मतों का परिचय। प्राग्वैदिक, वैदिक, शिक्षा, पौराणिक, रामायण, मौर्य एवं गुप्त काल के भारतीय संगीत का परिचय।
2. भरतकृत नाट्यशास्त्र का सामान्य परिचय व संगीत से संबंधित अध्यायों की विशेष सामग्री की जानकारी। वृहददेशी, संगीत रत्नाकर एवं संगीत राज ग्रंथों का परिचय। भारतीय की दो धाराओं गांधर्व एवं गान तथा मार्ग एवं देशी का अध्ययन। जाति की परिभाषा, लक्षण तथा भेद। ग्राम राग(पंचगीति) और देशी राग वर्गीकरण का अध्ययन।
3. ग्राम एवं मूर्छना की परिभाषा तथा उनके प्रकार। ग्राम की लोकविधि के आधार पर बनने वाली चौरासी शुद्ध तानों का ज्ञान। वर्तमान में प्रचलित किसी एक थाट में मूर्च्छना के आधार पर अन्य थाटों की उत्पत्ति। स्वर–प्रस्तार, खण्डमेरू, नष्ट एवं उद्दिष्ट विधि का अध्ययन।
4. भारतीय सगीत में वाद्यों के वर्गीकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन व वित्त वाद्य का स्पष्टीकरण। मध्यकालीन ग्रन्थों के आधार पर एकतंत्री, आलापनी, किन्नरी, चित्रन्त्री, पिनाकी, वंश एवं मधुकरी वाद्यों का अध्ययन।
5. इब्राहित आदिलशाह (द्वितीय) कृष्णानन्द व्यास, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, राजा नवाबअली, पं. रामचतुर मलिक, उस्ताद जिया मोईनुद्दीन डागर, उस्ताद बहराम खॉ, पं. एस.एन.रातंजनकर, पं. भीमसेन जोशी, संत पुरंदर दास, संत त्यागराज, श्यामा शास्त्री, मुत्तु स्वामी दीक्षित का सांगीतिक योगदान।
6. न्यूनतम 600 शब्दों में संगीत विषयक निबंध।
7. दिये गये पद्यांश अथवा वाद्यगत बोल रचना को पाठ्यक्रम से उपयुक्त राग व ताल को चुनकर उसमें निबद्ध करना।
8. पाठ्यक्रम के रागों में उच्चस्तरीय आलाप लेखन।

गायन/स्वरवाद्य पाठ्यक्रम (स्वाध्यायी)
एम.ए./एम.म्यूज. प्रथम वर्ष
द्वितीय प्रश्नपत्र
संगीत शास्त्र के क्रियात्मक सिद्धांत

समय– 3 घंटे पूर्णांक– 100

1. रागांग वर्गीकरण का परिचय। कल्याण, भैरव, तोड़ी रागांगो का विशेष अध्ययन तथा इन अंगों के अंतर्गत आने वाले रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन। पं. भातखण्डे जी द्वारा निर्दिष्ट हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के सर्वसाधारण नियम।
2. घराने का अर्थ एवं महत्व। ख्याल गायन के दिल्ली, ग्वालियर तथा पटियाला घरानों की जानकारी। तानसेन और उनके वंशजों की शिष्य परंपरा की जानकारी। सेनिया घराने के मुख्य कलाकारों का परिचय। बीन (रूद्रवीणा) का रामपुर घराना, इमदादखनी सितार एवं सुरबहार का घराना एवं हाफिज अली के सरोद घरानों का अध्ययन। प्रमुख शहनाई वादकों का परिचय एवं उनका सांगीतिक योगदान।
3. काकु, कुतप, वृन्द का शास्त्रीय परिचय। सरोद, संतूर, विचित्र वीणा, तानपुरा, बेला (वायलिन), इसराज, दिलरूबा, बांसुरी वाद्यों की उत्पत्ति एवं विकास का अध्ययन।
4. विभिन्न प्रकार की बंदिशों एवं गतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन काव्य और संगीत तथा छन्द और ताल का संबंध।
5. भारतीय संगीत के लिये आवश्यक कंठ संस्कार की विधि। स्वरोत्पादक यंत्र का सामान्य परिचय। श्वसन क्रिया, कंठ विकार के कारण एवं निदान।

1. तान एवं तिहाई रचना। (विभिन्न तालों में विभिन्न मात्राओं से भिन्न–भिन्न प्रकार की तान एवं तिहाई बनाकर स्वर ताल में निबद्ध करना)।
2. निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय विवरण तथा पूर्व पाठयक्रमों से समानता रखने वाले रागो के साथ तुलनात्मक अध्यन।

गायन/स्वरवाद्य पाठ्यक्रम (स्वाध्यायी)
एम.ए./एम.म्यूज. प्रथम वर्ष
प्रायोगिक:-1 प्रदर्शन एवं मौखिक

समय– 1 घण्टा **पूर्णांक–300**

1 पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय विवरण तथा पूर्व पाठ्यक्रमो से समानता रखने वाले रागो के साथ तुलनात्मक अध्ययन–

अ– निम्नलिखित 8 रागों मे से एक बड़ा ख्याल या विलंबित रचना (गत) तथा एक छोटा ख्याल या मध्य लय की रचना (गत) का विस्तृत गायकी या तंत्रकारी सहित प्रदर्शनः– 1. पुरिया कल्याण 2. अहीर भैरव 3. मारू बिहाग 4. बिलासखानी तोड़ी 5. जोग. 6. देसी 7. बसन्तमुखारी 8. श्री।

ब– निम्नलिखित रागों का सामान्य परिचय एवं मध्य लय की रचना का आलाप तान/तोडों सहित प्रदर्शनः– 1. शुद्धकल्याण 2. श्यामकल्याण 3. बैरागी (भैरव) 4.गुर्जरी तोड़ी 5.भूपालतोड़ी 6. झिझोंटी 7. नन्द 8. सोहनी

9. शंकरा 10. कलावती 11. हन्सध्वनि।

स–राग खमाज, भैरवी, पहाड़ी अथवा शिवरंजनी में से किसी एक राग में ठुमरी या टप्पा का गायन। वाद्य के विद्यार्थी द्वारा इन रागों मे से किसी एक राग में ठुमरी शैली की बंदिश अथवा धुन का प्रदर्शन। टीप–कुल 20 राग है।

2. उपर्युक्त रागों मे से पृथक–पृथक रागों मे एक ध्रुपद एक धमार (उपज सहित) एक तराने एवं एक त्रिवट/चतुरंग का विस्तुत गायकी सहित प्रदर्शन अथवा अपने वाद्य पर तीन ताल से पृथक अन्य दो तालों में रचनाओं का आलाप – तान सहित वादन।

गायन/स्वरवाद्य पाठ्यक्रम (स्वाध्यायी)
एम.ए. प्रथम वर्ष
प्रायोगिकः-2 मंच प्रदर्शन

समय– 30 मिनिट **पूर्णांक– 150**

4. परीक्षार्थी द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम में से कोई एक राग रचना का (विस्तृत गायकी/तन्त्रकारी सहित) प्रदर्शन।
5. परीक्षक द्वारा दिये गये पांच रागों में से किसी एक राग की गायकी/तन्त्रकारी के साथ प्रस्तुति।
6. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से किसी एक राग में ठुमरी, टप्पा अथवा ठुमरी शैली पर आधारित रचना अथवा धुन का प्रदर्शन।

आंतरिक मूल्यांकन

पूर्णांकः 50

आवश्यक निर्देश–: आंतरिक मूल्यांकन के अन्तर्गत प्रत्येक सेमेस्टर एवं प्रत्येक कोर्स के विद्यार्थियों को प्रायोगिक परीक्षा के समय दो फाईल प्रस्तुत करनी होगी।

1. कक्षा में सीखे गये रागो की स्वर लिपि/तोड़ो का विवरण
2. विश्वविद्यालय एवं नगर में आयोजित संगीत कार्यक्रमों की रिर्पोट

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11. संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12. भारतीय संगीत का इतिहास – श्री उमेश जोशी
13. निबंध संगीत – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
14. निबंध संगीत – श्री आर. एन. अग्निहोत्री
15. तन्त्री वादन की वादन कला – डॉ. प्रकाश महाडिक
16. ध्वनि और संगीत – प्रो. ललित किशोर

परिशिष्ठ क्र.–13

एम.ए./एम.म्यूज अंतिम वर्ष (स्वाध्यायी)

विषयः– गायन/स्वरवाद्य

प्रथम प्रश्नपत्र

भारतीय संगीत का इतिहास

समयः– 3 घण्टे पूर्णांक–100

1. श्रुति और स्वर का संबंध तथा श्रुति और स्वर पर विभिन्न ग्रंथकारों के विचार। श्रुतियों के विभिन्न नाप (प्रमाण श्रुति उपमहती श्रुति और महती श्रुति)। भरत, शारंगदेव, रामामात्य, व्यकंटमखी और अहोबल के शुद्ध विकृत स्वरों का अध्ययन।
2. प्रबंध की परिभाषा एवं प्रकार । प्रबंध के धातु एवं अंगों का परिचय। ध्रुपद–धमार की उत्पत्ति एवं विकास तथा ध्रुपद की बानियों एवं वर्तमान में प्रचलित परम्पराओं (दरभंगा, डागर, विष्णुपुर और हवेली) का अध्ययन। ध्रुपद शैली का ख्याल और वादन की शैलियों पर हुए प्रभाव का विवेचन।
3. मध्ययुग में भारतीय संगीत पर विदेशी संगीत के प्रभाव का अध्ययन। 'स्वरमेल कलानिधी' 'राग तरंगिणी', 'संगीत पारिजात' एवं 'चतुर्दण्डिप्रकाशिका', 'संगीत दर्पण' एवं 'रागविबोध' ग्रंथों का परिचय।
4. मार्ग ताल एवं देशी ताल पद्धति का परिचय एवं ताल के दस प्राणों का अध्ययन। कर्नाटक संगीत पद्धति के प्रमुख गीत प्रकारों का अध्ययन।
5. 'अष्टछाप' के संत कवियों के संगीत संबंधित विषयों का परिचय। अबुल फजल, सवाई प्रताप सिंह देव, विलियम जोन्स, कैप्टन विलर्ड, एस.एम.टैगोर, इ.क्लीमेंट्स, पंडित ओंकारनाथ ठाकुर, पं. कुमार गन्धर्व, उस्ताद अमीर खाँ (गायन), आचार्य बृहस्पति, श्री पी. साम्बामूर्ती और डॉ. प्रेमलता शर्मा द्वारा किये गये सांगीतिक कार्यो का परिचय।
6. न्यूनतम 600 शब्दों में संगीत विषयक निबंध।
7. दिये गये पद्यांश अथवा वाद्यगत बोल रचना को पाठ्यक्रम से उपयुक्त राग व ताल को चुनकर उसमें निबद्ध करना।
8. पाठ्यक्रम के रागो में उच्चस्तरीय आलाप लेखन।

एम.ए./एम.म्यूज अंतिम वर्ष (स्वाध्यायी)

विषयः– गायन/स्वरवाद्य

द्वितीय प्रश्नपत्र

संगीत शास्त्र के क्रियात्मक सिद्धांत

समयः– 3 घण्टे **पूर्णांक–100**

1. राग–रागिनी वर्गीकरण, मेल राग वर्गीकरण एवं थाट–राग वर्गीकरण का अध्ययन। रागांग वर्गीकरण के अंतर्गत सारंग, मल्हार एवं कान्हड़ा रागागों का अध्ययन।
2. ख्याल गायन के आगरा, किराना तथा जयपुर घरानों का परिचय एवं उनकी गायन शैलियों का अध्ययन। बाबा उस्ताद अलाउद्दीन खॉ का (सितार–सरोद) घराना, उस्ताद मुश्ताक अली खॉ का (सितार) घराना एवं प्रमुख सारंगी, बेला (वायलिन) तथा बाँसुरी वादकों का शैलीगत परिचय एवं उनका सांगीतिक योगदान।
3. भारतीय संगीत में वृन्दगान एवं वृन्दवादन। रूद्रवीणा, सितार, सुरबहार, सारंगी, शहनाई वाद्यों की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन। आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों की जानकारी।
4. सौन्दर्य शास्त्र का परिचय, कला की परिभाषा, कलाओं की संख्या और प्रकार। रस की परिभाषा व भेदों का सामान्य अध्ययन। रस और संगीत का संबंध तथा इस विषय पर आधुनिक विचारधारा का अध्ययन।
5. शोध प्रविधि का सामान्य अध्ययन– अनुसंधान की परिभाषा एव प्रक्रिया । भारतीय संगीत में शोध की दिशाएं। शोध विषय का चयन। शोध विषय की रूपरेखा। ग्रन्थ सूची।
6 तान एवं तिहाई रचना । (विभिन्न तालों में विभिन्न मात्राओं से भिन्न–भिन्न प्रकार की तान एवं तिहाई बनाकर स्वर ताल में निबद्ध करना)
7 निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय विवरण तथा पूर्व पाठ्यक्रमों से समानता रखने वाले रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन–

एम.ए./एम.म्यूज अंतिम वर्ष (स्वाध्यायी)

विषयः– गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिकः-1 प्रदर्शन एवं मौखिक

समय 1 घण्टे

1. पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं निम्नलिखित रागों का विस्तृत शास्त्रीय परिचय तथा पूर्व पाठ्यक्रमों से समानता रखने वाले रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन– निम्नलिखित 8 रागों मे से एक बडा ख्याल या विलम्बित रचना (गत) तथा एक छोटा ख्याल या मध्यलय की रचना (गत) की विस्तृत गायकी या तंत्रकारी सहित प्रदर्शन–

अ– 1. दरबारी कान्हड़ा, 2. मियॉ मल्हार 3. शुद्ध सारंग 4. रागेश्री 5. जोग कौन्स, 6. भटियार 7. कौन्सी कान्हड़ा 8. गौड़ सारंग।

ब– निम्नलिखित रागों का सामान्य ज्ञान एवं मध्यलय की रचना का आलाप–तान सहित प्रदर्शन।
1. आभोगी कान्हड़ा 2. नायकी कान्हड़ा 3. गौड मल्हार 4. मेघ मल्हार 5. मध्यमादी सारंग 6. मधुकौन्स 7. मधुवन्ती 8. कोमल रिषभ आसावरी 9. गुणकली (गुणक्री भैरव थाट) 10. विभास (भैरव) 11. परज।

स– राग देश, तिलंग, भैरवी एवं पीलू में से किसी एक राग में ठुमरी का गायन। वाद्य के विद्यार्थी द्वारा इन रागों मे से किसी एक राग में ठुमरी शैली का वादन या धुन का प्रदर्शन।

2. उपर्युक्त रागों मे से एक ध्रुपद एक धमार (उपज सहित) एवं एक तराने, त्रिवट/चतुरंग का विस्तृत गायकी सहित प्रदर्शन अथवा अपने वाद्य पर तीनताल से पृथक अन्य दो तालों में रचनाओं का आलाप–तान सहित वादन।

एम.ए./एम.म्यूज अंतिम वर्ष (स्वाध्यायी)

विषयः– गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिकः-2 मंच प्रदर्शन

पूर्णांक–150

समय 1 घण्टे

1. परीक्षार्थी द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम में से कोई एक राग इच्छानुसार चुनकर 30 मिनिट में विलंबित एवं मध्यलय की रचना का (विस्तृत गायकी/तन्त्रकारी सहित) प्रदर्शन।
2. परीक्षक द्वारा दिये गये पांच रागों में से किसी एक राग की गायकी/तन्त्रकारी के साथ प्रस्तुति।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से किसी एक राग में ठुमरी, टप्पा अथवा ठुमरी शैली पर आधारित रचना अथवा धुन का प्रदर्शन।

आंतरिक मूल्यांकन

पूर्णांकः 50

आवश्यक निर्देश–: आंतरिक मूल्यांकन के अन्तर्गत प्रत्येक सेमेस्टर एवं प्रत्येक कोर्स के विद्यार्थियों को प्रायोगिक परीक्षा के समय दो फाईल प्रस्तुत करनी होगी।

1. कक्षा में सीखे गये रागो की स्वर लिपि/तोड़ो का विवरण
2. विश्वविद्यालय एवं नगर में आयोजित संगीत कार्यक्रमों की रिर्पोट

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6 अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र परांजपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11. संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवांगन
12. भारतीय संगीत का इतिहास – श्री उमेश जोशी
13. निबंध संगीत – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
14. निबंध संगीत – श्री आर. एन. अग्निहोत्री
15. तन्त्री वादन की वादन कला – डॉ. प्रकाश महाडिक
16. ध्वनि और संगीत – प्रो. ललित किशोर